ग्रामोत्थान की कुंजी है गाय

हमारी सम्पन्नता और खुशहाली इस बात पर निर्भर करती है कि हमारे गाँववाले कितने सम्पन्न और खुशहाल हैं। उनकी स्थिति का आकलन औसत के आधार पर नहीं किया जा सकता। ऐसा करना उन चार मूर्ख विद्वानों की कथा को दोहराना होगा, जो नदी पार करने के लिए गहराई का औसत निकालकर उसमें घुस गये और डूब गये। इस कथा का देश के सभी क्षेत्रों में व्यापक संज्ञान होने के बावजूद हमारे अर्थशास्त्री, जो पूँजीवादी या समाजवादी व्यवस्था के अन्धानुकरण के पक्षधर हैं, औसत निकालकर सम्पन्नता का आकलन करने की पद्धति से अलग होने की मानसिकता नहीं बना पा रहे हैं। गाँव कैसे खुशहाल होंगे ? कभी हमारे एक प्रधानमन्त्री ने गाँव की खुशहाली पर गर्व करते हुए कहा था कि अब तो हल चलाता हुआ किसान बैल की सींग में ट्रांजिस्टर टाँगकर विविध भारती के गाने सुनता है। अनावश्यक या विलासितापूर्ण भौतिक वस्तुओं तक पहुँच को सम्पन्नता का लक्षण मान लिया गया है। इसी अवधारणा ने अधिक श्रम की अपेक्षा घूसखोरी या अवैध तरीकों (जिनमें चोरी, डकैती, तस्करी या दादागिरी सम्मिलित हैं) की ओर लोगों को उन्मुख किया है। पिछले तीन-चार दशकों से इस दिशा में बढ़ने की होड़ के कारण अब किसी के ईमानदार होने की चर्चा पर लोगों को विश्वास नहीं होता है। इस मानसिकता का विस्तार रोकने के लिए हमें अपने परिवेश और प्रकृति के अनुकूल आचरण करना होगा, न कि अन्धानुकरण।

गाँवों की सम्पन्नता और खुशहाली को भी इसी दृष्टिकोण से देखना होगा। गाँवों में प्रकाश के लिए हम बिजली के खम्भे गाड़कर तार जरूर खींचते जा रहे हैं, लेकिन बिजली नहीं दे पा रहे हैं, दे भी नहीं सकते। जो विद्युत्-प्रकाश गाँवों की मुट्ठी में बन्द है उसे खोलने के लिए गाँववासियों को खुद ही प्रयास करना होगा। जिस व्यक्ति के घर में पशु हों, वह गोबर गैस संयन्त्र लगाकर न केवल विद्युत्-प्रकाश पा सकता है अपितु भोजन पकाने के लिए ईंधन भी पा सकता है। परन्तु, यह तभी सम्भव होगा, जब हम धरातलीय सत्य से मुँह फेरकर खड़े रहने की मानसिकता से बाहर निकलें और यान्त्रिक तथा चमत्कारिक चकाचौंध से निकलकर पशु आधृत कृषि को, जो समस्त आधुनिकताओं के बावजूद अस्सी प्रतिशत से अधिक आज भी प्रचलित है, सम्पूर्णता के साथ प्रोत्साहित करें। ऐसा करने के लिए हमें हीन भावना से उबरकर 'गो आधृत अर्थव्यवस्था' को केन्द्रबिन्दु बनाना पड़ेगा। यूरोप या अन्य देशों में दूध पीने या खाने के लिए ही गाय को पाला जाता है, लेकिन हमारे देश में गोवंश की सम्पूर्णता में उपयोगिता रही है, आज भी हैं। इसलिए गाँव की सम्पन्नता और खुशहाली बिना गोवंश के संरक्षण के सम्भव नहीं है तथा गाँवों के खुशहाल हुए बिना देश का सम्पन्न होना असम्भव है। हमने प्राचीनकाल से गाय को माता के रूप में पूजनीय माना है। दूध देनेवाले और कृषिकार्य में उपयोगी साबित होनेवाले दुनिया में बहुत से पशु हैं, लेकिन गाय और बैल की उपयोगिता अत्यधिक है। यही कारण है कि हमारे देश में गाय की महत्ता सर्वाधिक आँकी गई है । आज के वैज्ञानिक विश्लेषण से भी यह स्पष्ट हो चुका है कि गाय के दूध में प्रचुर पौष्टिकता है और रोगों से लड़ने की अद्‌भुत शक्ति ।

हमारे घरों में वर्षों से गाय के गोबर से लिपाई-पुताई होती आ रही है। किसी ने हाथी या घोड़े के गोबर से, जिसे लीद कहते हैं, पुताई करने की कभी कल्पना नहीं की है। गाँव की अर्थव्यवस्था का केन्द्रबिन्दु गाय को बनाने की बात केवल भावनाओं पर आधृत नहीं है। महाराष्ट्र के पुसाढ़ में नादेप काका नाम से विख्यात नारायण देवी राव पढ़ारी गाय के गोबर के उत्पादों (साबुन, मिश्रित खाद, अंगराग भस्म, भित्ति रंग, पूजा के लिए सुगन्धित सामग्री आदि) से प्रतिवर्ष लगभग ढाई लाख रुपये अर्जित करते हैं। नादेप काका के पास सिर्फ़ तीन गायें हैं। उनके द्वारा बनाई गई मिश्रित खाद को, जो नादेप मिश्रण के रूप में ख्याति प्राप्त है, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, दिल्ली और आईपीसीएल, बड़ौदा के अलावा महाराष्ट्र, राजस्थान सरकार के कृषि विभागों द्वारा अभिप्रमाणित किया गया है। अनुसन्धान से स्पष्ट प्रमाण मिला है कि नादेप पद्धति से गाय के एक किलो गोबर से प्रतिवर्ष 1560 टन जैविक उर्वरक तैयार किया जा सकता है जो 14.6 एकड़ भूमि के लिए पर्याप्त होता है। गाय का गोबर ही नहीं, बल्कि गोमूत्र भी औषधीय गुणों के कारण विख्यात है और उसका इस्तेमाल कीटनाशक के रूप में भी हो सकता है। समय-समय पर जिनलोगों ने भी सात्त्विक मन से विचार किया, उन्होंने गोवंश की रक्षा और संवर्द्धन को अंगीकार करना ही श्रेयस्कर माना है। **स्वामी दयानन्द सरस्वती** ने 'गो करुणानिधि' नामक पुस्तक में लिखा है कि एक गाय के मांस में मात्र 80 सामिष व्यक्तियों के लिए एक समय का भोजन उपलब्ध हो सकता है, लेकिन वही गाय अपने जीवनकाल में लगभग 4,10,440 व्यक्तियों के लिए एक समय का भोजन उपलब्ध करा सकती है।

भारत में अभी खेतों की जुताई आदि का 10 प्रतिशत से अधिक कार्य बैलों द्वारा किया जाता है। बैलों का प्रयोग परिवहन के साधन के रूप में भी होता है। गोवंश की अभिवृद्धि के लिए योजनाएँ बनाकर देश के प्रत्येक गाँव में जीविकोपार्जन को सुनिश्चित किया जा सकता है और इससे अतिरिक्त विद्युत् उत्पादन भी सम्भव है। इसके साथ-साथ पशुमूत्र से कीटनाशक पदार्थों का उत्पादन भी सम्भव है। सन् 1999-2000 के दौरान भारत विश्व का सबसे अधिक दूध उत्पादन करनेवाला देश रहा और यहाँ सात सौ अस्सी लाख टन दूध का उत्पादन हुआ। भारत में साढ़े बाईस लाख टन शिशुदुग्ध और दुग्ध पाउडर का उत्पादन किया गया। अनुसन्धान से इस तथ्य की पुष्टि होती है कि गाय में हैजे के कीटाणुओं को नष्ट करने की क्षमता होती है। यदि तपेदिक के रोगी को गायों को बाँधे जानेवाले स्थान पर रखा जाता है, तो गाय के गोबर और मूत्र की गन्ध से तपेदिक के जीवाणु नष्ट हो जाते हैं। गाय के एक तोला घी से किये गये यज्ञ से एक टन ऑक्सीजन बनती है। गाय साँस छोड़ते समय ऑक्सीजन बाहर निकालती है। गुग्गल की गन्ध, जो गाय के शरीर से निकलती है, प्रदूषण सन्तुलित करती है। यदि शहरों के कूड़े-कचरे के ऊपर गाय का गीला गोबर छिड़का जाता है, तो उससे निकलनेवाली दुर्गन्ध नष्ट हो जाती है और वह कूड़ा-करकट अच्छे खाद में बदल जाता है। पशुओं के गोबर और मूत्र से ऐसी 32 आवश्यक औषधियाँ निर्मित की जा रही हैं, जो पेट-सम्बन्धी रोगों के, हृदय, यकृत आदि की विकृतियों के और कैंसर के इलाज के लिए सफलतापूर्वक प्रयुक्त की जा रही है। गाय के गोबर से निर्मित मिश्रित खाद जहाँ एक ओर भूमि की उर्वरता का संरक्षण करती है, वहीं दूसरी ओर यह कृषि उत्पादों को खतरनाक रसायनों से मुक्त करती है। रसायनिक उर्वरकों से भूमि की उर्वरता धीरे-धीरे समाप्त हो रही है और इससे नये-नये प्रकार के कीट उत्पन्न हो रहे हैं, जिनको समाप्त करने के लिए हमें कीटनाशक पदार्थों के उत्पादन के लिए अधिक संसाधन जुटाने पड़ते हैं और इससे हमारे कृषि उत्पाद विषैले हो जाते हैं।

जो लोग गोमांस का प्रचार करते हैं, उन्हें **पैगम्बर मुहम्मद साहब** के इस कथन का ध्यान रखना चाहिए कि 'गाय का दूध रसायन है, इसका घी अमृत है, लेकिन इसका मांस बीमारी है।' **यीशू मसीह** ने कहा है कि 'गोहत्या मानवहत्या सदृश है।' सिखों के दसवें **गुरु गोविन्दसिंहजी** ने गाय की रक्षा की प्रार्थना करते हुए चण्डी से यह कहा, 'कृपया मेरी यह इच्छा पूरी कीजिए और गाय की रक्षा कीजिए और मुझे अपने दुःखों से मुक्ति दीजिए।' आधुनिक महापुरुषों में **महात्मा गाँधी** ने कहा है कि 'गाय की रक्षा का प्रश्न स्वशासन के प्रश्न से भी अधिक महत्त्वपूर्ण है।' **लोकमान्य तिलक** ने कहा कि 'स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद गोहत्या पूरी तरह से समाप्त कर दी जायगी।' **आचार्य विनोबा भावे** ने कहा है, 'मैंने कुरान और बाइबल, दोनों का ही अध्ययन किया है और इन दोनों ग्रन्थों में स्पष्टतः यह उल्लेख किया गया है कि गोहत्या एक अक्षम्य अपराध है। **जयप्रकाश नारायण** कहा करते थे, 'हमारे लिए गोहत्या पर प्रतिबन्ध आवश्यक है।'

आज असली मुद्दा गाँवों की सम्पन्नता का है। **सम्पन्नता उदारीकरण से नहीं आयगी बल्कि अपने पैरों पर खड़े होने की क्षमता से विकसित होगी।** हम अपने पैरों पर अपने साधनों के सहारे ही खड़े हो सकते हैं। ईश्वर ने बड़ी अनुकम्पा करके हमें गोवंश का उपहार दिया है। हमें उसे न केवल नष्ट होने से बचाना है, जिसके लिए सम्पूर्ण गोवंश की हत्या पर रोक लगाई जानी चाहिए, बल्कि उसका संवर्द्धन भी करना है, जिससे हमारी भौतिक सम्पन्नता में भी श्रीवृद्धि हो सके। गाँवों को आत्मनिर्भर बनाने का यही एकमात्र उपाय है। गाय ग्रामोत्थान की कुंजी है।

✍ **राजनाथ सिंह,** सांसद

*संकलित

सौजन्य :
• Miss Priyamvada Rajpurohit, Jodhpur
• Miss Ritu Soni, Jodhpur

• HOARDING • CINEMA SLIDE
• WALL PAINTING • NEWSPAPER ADVERTISING
• RADIO ADVERTISING • TV ADVERTISEMENT
Anandeep, Top Floor Office No. 1, Main "B" Road, Sardarpura, Jodhpur Tel. & Fax : (O) 2636030, 2629148 Mob. : 93147-12925

UDAY TUITION CENTER
Badlon Ka Chowk, Jodhpur
Shri Gajendra Veer Singh Solanki • M. 93516-85545

Shri Shyam Sundar Jalani,
Shri Anil Jalani, Shri Surendra Jalani
Jodhpur